धूतपापेश्वर
१८७२ से आयुर्वेद सेवा

औषधी विवरण पुस्तिका

हेमंत ऋतु विशेषांक

Aushadhi Vivaran Pustika 2019

वर्षा, शरद एवं हेमंत ऋतुओं को मिलाकर विसर्ग काल कहा जाता है। हेमंत ऋतु प्रकृति में आनंद एवं उत्साह भर देता है। इस ऋतु में ठंडी की शुरुआत होती है तथा मनुष्य का बल सर्वाधिक होता है।

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह ऋतु बहुत लाभदायक होता है क्योंकि इस ऋतु में जाठराग्नि प्रबल होता है। **'पक्ता भवति हेमन्ते मात्राद्रव्यगुरुक्षमः।'** अतः हेमन्त ऋतु में प्रबल जाठराग्नि मात्रा में अधिक एवं गुरु अन्न को पचाने में समर्थ हो जाता है। यदि आहार योग्य मात्रा में न मिले तो यह तीक्ष्ण हुई अग्नि शरीरस्थ रस का क्षय कर, वायु को प्रकुपित भी कर सकता है। जाठराग्नि विकृती से सबसे पहले अन्नवह स्रोतस् प्रभावित होता है। अन्नवह स्रोतस् दुष्टि के कारण अरोचक, अन्नद्वेष, अविपाक, छर्दि, अग्निमांद्य, अजीर्ण, अम्लपित्त, उदरशूल आदि लक्षण एवं व्याधि उत्पन्न होते है। जिसमें अग्नि दीपन और आमपाचन चिकित्सा करना जरूरी होता है।

'औषधी विवरण पुस्तिका हेमंत ऋतु २०१९' के इस अंक में अन्नवह स्रोतस् दुष्टि की चिकित्सा में उपयुक्त औषधी कल्पों का विवरण किया है। अग्नितुंडी वटी, सूतशेखर रस, चंद्रकला रस, आरोग्यवर्धनी, पुष्पधन्वा रस, त्रिभुवनकीर्ति रस एवं मकरध्वज गुटिका इन कल्पों का दुष्ट हुए अन्नवह स्रोतस् पर होनेवाले कार्य तथा उनका सामान्य विवेचन इस अंक में किया है। औषधी विवरण पुस्तिका शरद ऋतु अंक के प्रति आपकी प्रशंसा के लिए हम आपके आभारी है। आशा है कि, 'औषधी विवरण पुस्तिका हेमंत ऋतु २०१९' भी आपको पसंद आयेगा। इस अंक के प्रति आपकी प्रतिक्रिया का इंतजार रहेगा।

धन्यवाद!

अग्नितुंडी वटी

भारत भैषज्य रत्नाकर – १/९८
एस्. डी. एस्. मोनोग्राफ क्र. ०८०००२४

अग्नितुंडी वटी यह अन्न का शीघ्र पचन करनेवाला रसकल्प है। यह कल्प उत्तम दीपक, पाचक एवं शूलघ्न कार्य करता है। 'रोगाः सर्वेऽपि मन्देऽग्नौ।' अधिकतर रोग मंदाग्नि के कारण उत्पन्न होते है। अग्नितुंडी वटी के मुख्य घटक द्रव्य पारद गंधक की कज्जली और विष द्रव्य जैसे शोधित वत्सनाभ और शोधित कुचला है। त्रिफला, विडंग, अजमोदा, जीरक, चित्रक, सैंधव, सौवर्चल, सामुद्र लवण उपस्थित है। क्षारत्रय जैसे शोधित टंकण, सज्जीक्षार, यवक्षार भी सम्मिलीत है। इन सभी द्रव्यों को खल में एकत्रित कर निंबू स्वरस की भावना देकर यह कल्प निर्मित किया जाता है। अग्नितुंडी वटी में शोधित कुचला १६ भाग में उपस्थित है और अन्य सर्व द्रव्य १ भाग में उपस्थित है। शोधित कुचला कटु, तिक्त रसात्मक होने से उत्तम दीपन, पाचन एवं ग्राही कार्य करता है। उसके वातशामक एवं उष्ण गुणधर्म के कारण, उदरशूल कम करने में सहायता होती है। अग्नितुंडी वटी अग्निमांद्य एवं संबंधित विकार को नष्ट करने में

उपयुक्त है। अजीर्ण, विसूचिका, ग्रहणी, शूल, कोष्ठगत वात, परिणाम शूल आदि अन्नवह स्रोतस् विकारों में गुणकारी होती है। आमवात जैसे घोर विकार की सामावस्था में अग्नितुंडी वटी का उपयोग फलदायक होता है। इस वटी का प्रमुख कार्यक्षेत्र आमाशय और पक्वाशय है। अग्निप्रदीप्त होने से अन्न पचन में सुधार आता है। अग्निमांद्य के कारण भूक न लगना, उदर गौरव, आलस्य, बेचैनी, असम्यक् मलप्रवृत्ति आदि लक्षण दिखाई देते है।

अविपक्वोऽग्निमांद्येन यो रस: निगद्यते।
रोगाणां प्रथमो हेतु: सर्वेषां आम संज्ञक:।।

यो. र. अजीर्णनिदान/१

अग्निमांद्य के कारण अजीर्ण उत्पन्न होता है तथा आम निर्मिती भी होती है। यह आम अनेक व्याधियों का महत्त्वपूर्ण हेतु है। अग्नितुंडी वटी में चित्रक, विडंग, अजमोदा जैसे उष्ण, दीपक, कटु रसात्मक द्रव्य आमपाचन और अग्निदीपन का कार्य करते है। कफवृद्धि के कारण उत्पन्न अग्निमांद्य में यह वटी उपयुक्त है। विष्टब्धाजीर्ण में वात एवं पुरीष का अवष्टंभ होता है, आध्मान, अंगमर्द, शिर:शूल आदि लक्षण होने पर अग्नितुंडी वटी अत्यंत फलदायक है। निंबू रस की भावना होने से यह कल्प वातानुलोमन करने में सहायक होता है। दीपक एवं पाचक द्रव्यों के कारण यह आमविष को नष्ट करती है। मलविबंध, उदर गौरव आदि लक्षण अग्नितुंडी वटी के प्रयोग से कम होते हैं, इसमें उपस्थित लवण द्रव्यों से विबंध नष्ट होता है।

परिणामशूल तथा गुल्म में वात एवं कफ प्रधान लक्षण होने पर अग्नितुंडी वटी का उपयोग करना चाहिए। कफप्रधान और वात प्रधान ग्रहणी रोग में अग्निमांद्य, अरुचि, उदरगौरव, मलप्रवृत्ती आम एवं कफयुक्त होती है तथा उदरशूल भी रहता है। मलावष्टंभ एवं द्रव मलप्रवृत्ति का दुष्टचक्र दिखाई देता है। अग्नितुंडी वटी इन सभी लक्षणों को कम करती है। अग्निवर्धक और आमपाचन कर सम्यक् मलप्रवृत्ति करने में सहायक होती है। कोष्ठ के विविध रोगोंपर अवस्थाभेद के अनुसार अग्नितुंडी वटी फलदायक है। यह वटी वात विकार में भी फलदायक है। आमवात व्याधि की सामावस्था में आम उपस्थित होने के कारण संधि में शोथ एवं वेदना अधिक रहती है। इस व्याधि में आम और वात दोनों की चिकित्सा करनी चाहिए। अग्नितुंडी वटी आमपाचन और वातशामक होने से आमवात के रुग्ण को राहत प्रदान करती है।

सूतशेखर रस (सादा)

भारत भैषज्य रत्नाकर ५/८२६१
एस्. डी. एस्. मोनोग्राफ – ०८००२१४

'सूतशेखर' अर्थात् सूत (पारद) जिसके शिखर पर है। इस पाठ के निर्मिति में पारद को अग्रेसर स्थान होने के कारण इस कल्प को सूतशेखर नाम से संबोधित किया जाता है। सूतशेखर 'पित्त की मात्रा' के नाम से परिचित औषध है। यह साम पित्त पर प्रभावी होता है। इस कल्प की रचना में पारद गंधक कज्जली के साथ शोधित वत्सनाभ तथा उसका प्रतिविष शोधित टंकण भी उपस्थित है। धत्तुर बीज, ताम्र भस्म और शंख भस्म भी मिश्रित है। साथ ही त्रिकटु, चातुर्जात, बिल्व, कर्चुर आदि पाचन संस्थान पर कार्यकारी द्रव्य उपस्थित है। सभी द्रव्य १ भाग में लेकर भृंगराज स्वरस की भावना देकर सूतशेखर रस निर्मित किया जाता है।

सूतशेखर रस (सादा) की उपयुक्तता निम्न सूत्र में वर्णित है।

भक्षयेदम्लपित्तघ्नो वान्तिशूलामयापह:।
पञ्चगुल्मान्पञ्चकासान् ग्रहण्यामयनाशन:।।
त्रिदोषोत्थातिसारघ्न: श्वासमन्दाग्नि नाशन:।
उग्रहिक्कामुदावर्तं देहयाप्यगदापह:।।
मण्डलान्नात्र सन्देह: सर्वरोगहर: पर:।
राजयक्ष्महर: साक्षाद्रसोऽयं सूतशेखर:।।

भा. भै. र. ५/८२६१

सूतशेखर रस (सादा) अम्लपित्त, छर्दि, शूल, पाँच प्रकार के गुल्म, पाँच प्रकार के कास, ग्रहणी, त्रिदोषज अतिसार, श्वास, अग्निमांद्य, हिक्का एवं उदावर्त आदि विभिन्न व्याधियों में उपयुक्त होता है। सूतशेखर रस अम्लपित्त की प्रसिद्ध औषध है। अध्यशन, विषमाशन, विरुद्धाशन आदि के कारण अपचन होता है। अग्निमांद्य उत्पन्न होने के साथ यदि अपथ्य शुरू रहा तो अन्न अधिक विदग्ध होता है। अन्न को अम्लता प्राप्त होती है, जिससे विदग्धावस्था बढती है।

पित्तप्रकोप में विशेषत: अम्ल, द्रव इत्यादि गुणों से वृद्धि होती है।

अविपाकक्लमोत्क्लेशतिक्ताम्लोद्गारगौरवैः।
हृत्कण्ठदाहरुचिभिश्चाम्लपित्तं वदेद्भिषक्।

मा. नि./अम्लपित्त/२

यह सामान्य लक्षण दिखते है।

उर्ध्वग अम्लपित्त प्राय: कफानुबंधि होता है। इसमें छर्दि होने के पश्चात् रुग्ण को उपशय मिलता है। अम्लपित्त में प्रामुख्य से कफपित्त दुष्टि होती है। साम पित्त पर कार्य करनेवाला सूतशेखर रस व्याधि प्रत्यनीक कल्प है। इस कल्प में उपस्थित त्रिकटु, चातुर्जात जैसे द्रव्य दीपन पाचन का कार्य करते है जिससे अग्निमांद्य एवं सामता नष्ट होती है। शंख भस्म, बिल्व जैसे ग्राही द्रव्य, द्रव गुण से बढे हुए पित्त को कम करने में सहायक होते है। सूतशेखर रस (सादा) दीपक एवं पाचक है। इसका मुख्य कार्य आमाशय, ग्रहणी और यकृत पर होता है, जिससे पचन कार्य सुधारने में लाभदायक होता है। अम्लपित्त में वमन एवं विरेचन के प्रयोग के पश्चात् सूतशेखर रस (सादा) का उपयोग करना चाहिए। पित्तदुष्टिजन्य विकारों के कारण दूषित हुए ग्रहणी को ठीक करने के लिए भी सूतशेखर उपयुक्त होता है। ग्रहणी या आंत्र में उत्पन्न शोथ या व्रण के कारण कभी कभी उदर शूल होकर छर्दि होने लगती है, तो कई बार द्रवमलप्रवृत्ति होने लगती है। सूतशेखर रस (सादा) में उपस्थित शोधित धत्तूर बीज, बिल्व मज्जा, कर्चुर आदि पाचक, ग्राही एवं शूलघ्न द्रव्यों के कारण पित्तजन्य छर्दि तथा अतिसार में उपशय मिलता है। पित्त प्रकोप के कारण उत्पन्न शिर:शूल में सूतशेखर रस (सादा) की मात्रा फलदायक होती है। पित्त प्रकोप के कारण, अधिक समय में धूप में काम करने से तथा सूर्यावर्त – अर्धावभेदक जैसे पित्तवातप्रधान शिरोरोग में सूतशेखर रस (सादा) उपयुक्त साबित होता है।

सूतशेखर रस (सादा) में शोधित वत्सनाभ उपस्थित होने के कारण यह कल्प ज्वर में भी उपयुक्त होता है। ज्वर में अग्निमांद्य रहता है, साथ ही आम के कारण स्रोतोरोध भी रहता है। इस रस कल्प में ताम्र भस्म तथा भृंगराज स्वरस की भावना है, जो यकृत पर कार्यकारी द्रव्य है। धत्तुर बीज वेदनाशामक कार्य करता है, कर्चूर पित्तघ्न और दाहशामक होता है। दूषित पित्त के दीर्घकाल तक संपर्क के कारण आमाशय एवं ग्रहणी के अभ्यंतर भाग में क्षोभ उत्पन्न होता है जिसके कारण आमाशय एवं ग्रहणी में व्रणोत्पत्ती दिखाई देती है। सूतशेखर रस (सादा) आमाशय एवं ग्रहणी स्थित दूषित पित्त का पाचन कर उसे बाहर निकालने का कार्य करता है।

चंद्रकला रस

भारत भैषज्य रत्नाकर – २/१८८५
एस्. डी. एस्. मोनोग्राफ क्र. – ०८०००६४

चंद्रकला रस उत्कृष्ट पित्तशामक एवं रक्तप्रसादक कल्प है। इसमें अधिकतर द्रव्य तिक्त एवं मधुर रसात्मक हैं। चंद्रकला रस के सेवन से पित्त के बढे हुए तीक्ष्ण और उष्ण गुण कम होते हैं। इस कल्प का वीर्य शीत होता है। चंद्रकला रस में पारद, गंधक, कज्जली के साथ दो मुख्य भस्म सम्मिलीत है – अभ्रक भस्म और ताम्र भस्म। अभ्रक भस्म रसायन, बल्य, पित्तशामक, वातशामक, मज्जाधातु, मस्तिष्क एवं वातवाहिनीयों पर बल्य कार्य करता है। ताम्र भस्म विशेषत: रक्तधातु एवं यकृत् पर कार्य करता है।

इसमें कटुका, गुडूची सत्व, पर्पट, उशीर, चंदन (श्वेत), सारिवा, माधवी पुष्प आदि वनस्पति द्रव्य प्रत्येकी १ भाग में उपस्थित है। इन सभी द्रव्यों को पित्तशामक, रक्तप्रसादक द्रव्य जैसे मुस्ता, दाडिम, दुर्वा, केतकी, सहदेवी, कुमारी, पर्पट रामशीतलिका, द्राक्षा, शतावरी आदि की भावना दी जाती है। मुस्ता एवं पर्पट, आमपाचक है, दाडिम, दुर्वा, केतकी जैसे द्रव्य पित्तशामक होते है। कुमारी यकृत पर कार्यकारी है। उशीर, चंदन, मधुमालती, सारिवा, मृण्दिका आदि सभी द्रव्य शीतल है और दाहशामक कार्य करते हैं। पारद गंधक की कज्जली, शतावरी एवं गुडूची बल्य एवं रसायन द्रव्य है।

यह कल्प पित्तशामक और शीत होते हुए भी अग्निमांद्य निर्माण नहीं करता। क्योंकि इसमें उपस्थित कुटकी, ताम्र भस्म जैसे द्रव्य अग्नि का दीपन करते हैं। इस कल्प में उपस्थित मुस्ता, पर्पट, सहदेवी, चंदन, मधुमालती, शतावरी, गुडूची, उशीर,

आदि सभी द्रव्य पित्त के तीक्ष्ण उष्ण आदि गुण वृद्धि से उत्पन्न लक्षण कम करने में अधिक उपयुक्त हैं।

चंद्रकला रस का प्रयोग ज्वर में विशेषत: पित्तज ज्वर अथवा वातपित्तज ज्वर में उष्मा कम करने हेतु किया जा सकता है। सर्वांगदाह, नेत्रदाह, मूत्रदाह पर चंद्रकला रस का शीत गुण असरदार साबित होता है। आमाशयस्थ व्रण से उत्पन्न रक्तज छर्दि के रुग्ण में इस कल्प के द्रव्यों से रक्तस्तंभन एवं पित्तशमन का कार्य होता है।

चंद्रकला रस तिक्त रसात्मक है। यह उत्तम रक्तप्रसादन का कार्य करता है। इसलिए इसका उपयोग रक्तपित्त व्याधि के उर्ध्वग एवं अधोग अवस्था में अधिक फलदायक होता है। नासागत रक्तस्राव, मुख से रक्तस्राव, मूत्रमार्ग, गुदमार्ग एवं योनी मार्ग से रक्तस्राव का स्तंभन करने के लिए यह कल्प उपयुक्त है। रक्तपित्त में पित्त दोष और दूष्य रक्तधातु की दुष्टि इस रसकल्प से कम होती है।

रसरक्तादि धातुओं में संचित दुष्ट पित्त का परिणाम मस्तिष्क पर होता है, जिससे मूर्च्छा, भ्रम, शिर:शूल आदि लक्षण दिखते हैं। यदि पित्त के दुष्टि का कारण यकृत् से संबंधित हो, तो चंद्रकला रस प्रयोग करना चाहिए।

स्वतंत्र पित्त प्रकोप के कारण उत्पन्न सर्वांग दाह अथवा मूत्र संबंधि लक्षण जैसे सदाह सशूल मूत्रप्रवृत्ति में यह कल्प राहत प्रदान करता है। यह कल्प उष्ण काल अर्थात् ग्रीष्म एवं शरद ऋतु में विशेष उपयुक्त है।

धूप में घूमने से, अग्नि समीप काम करने से, उष्ण द्रव्य के अतिसेवन से, अत्यधिक व्यायाम से उत्पन्न लक्षण जैसे शिर:शूल, उष्मा वृद्धि, नेत्र लाल होना, ज्वर आदि कम होते हैं।

स्त्रियों के रक्तप्रदर विकार में चंद्रकला का प्रयोग फलदायक है। रक्तप्रदर में सशूलार्तव, अत्यार्तव जैसे लक्षण दिखाई देते हैं। गर्भाशय एवं अपत्यमार्ग की श्लेमल त्वचा में क्षोभ होने से रक्तस्राव हो सकता है, ऐसी अवस्था में चंद्रकला रस का प्रयोग अशोकारिष्ट के साथ लाभदायक साबित होता है।

चंद्रकला रस कोष्ठ में पित्त की सुयोग्य उत्पत्ति में तथा यकृत् पर बल्य कार्य करता है तथा पित्त का शमन करने में लाभदायक कल्प है।

आरोग्यवर्धनी

भारत भैषज्य रत्नाकर – १/४४८
एस्. डी. एस्. मोनोग्राफ क्र. ०८०००४४

श्री नागार्जुन योगी राजाने इस वटी का निर्माण किया है। आरोग्य का वर्धन करनेवाली होने के कारण इस कल्प को आरोग्यवर्धनी कहते है। यह शोधित शिलाजतु एवं शोधित गुग्गुल युक्त कल्प है। इस कल्प का प्रधान द्रव्य 'कुटकी' है, जो इसमें ५०% उपस्थित रहता है। पारा–गंधक कज्जली के साथ लोह भस्म, ताम्र भस्म, अभ्रक भस्म, त्रिफला एवं चित्रक सम्मिलीत है। इस कल्प को निंब रस की भावना देकर खल्वीय रसायन विधी द्वारा तैयार किया जाता है। कुटकी भेदन और पित्तसारक कार्य करती है। साथ ही ताम्र भस्म, शिलाजतु जैसे द्रव्य पित्त स्राव का योग्य निर्माण होने में मदद करते है। यकृत पर आरोग्यवर्धनी का विशेष कार्य होने से यह कामला व्याधि की उत्तम औषध साबित होती है। इस कल्प में उपस्थित पारा गंधक कज्जली,

कृमीघ्न, रसायन और योगवाही है। लोह भस्म उत्तम रक्तवर्धक और पांडुनाशक है। ताम्र भस्म यकृत उत्तेजक एवं पित्तस्राव करनेवाला है। अभ्रक भस्म बल्य और रसायन है। त्रिफला क्लेद और कफनाशक है, मेदनाशक और व्रणरोपक होता है। गुग्गुल लेखन करनेवाला और शोथहर होता है। शिलाजतु भी कफ, क्लेद एवं मेदनाशक कार्य करता है। साथ ही धातुवर्धक भी है। चित्रक दीपक और पाचक है, यकृत एवं ग्रहणी पर कार्य करता है। निम्ब रस की भावना से आरोग्यवर्धनी के कुष्ठघ्न गुणों की वृद्धि होती है।

'मंडलं सेविता ह्येषा हृन्ति कुष्ठान्यशेषत:।'

आरोग्यवर्धनी १ मण्डल अर्थात् ४२ दिन सेवन करने से सर्व कुष्ठनाशक कार्य करती है। लेकिन कई बार व्याधि की जीर्णावस्था एवं रोगबल अधिक होने से इसका प्रयोग लंबे समय तक करना जरूरी होता है। पित्त और रक्त का अन्योन्य संबंध बताया है। पित्तदुष्टी के कारण रक्तदुष्टी भी होती है। यह गुटी यकृतपर कार्यकारी होने से रक्तदुष्टी से उत्पन्न त्वचाविकार नष्ट करती है। विरुद्ध आहार जैसे दुग्ध–मत्स्य, फल–दूध आदि के कारण कुष्ठविकार होते है। त्वचा, रक्त, मांस, लसीका अंतर्गत विविध कुष्ठ रोग होते है। इन कुष्ठरोगों में प्रथम देह शुद्धी करने के पश्चात् आरोग्यवर्धनी का उपयोग करना चाहिए। कुष्ठ रोग में मलावष्टंभ होनेपर इस कल्प का उपयोग आवश्य करे।

'वातपित्त कफोभ्दूतान् ज्वरान् नाना प्रकारजान्।
देया पंच दिने जाते ज्वरे रोगे वटी शुभा।।'

विविध प्रकार के ज्वरों में आरोग्यवर्धनी उपयुक्त है। ज्वर में पाँच दिन लंघन के पश्चात् इसका शेष दोषों के पाचन हेतु उपयोग करे। संतत आदि विषमज्वर में भी यह उपयुक्त है। ज्वर के परिणाम स्वरुप यकृत् प्लीहा वृद्धी, अग्निमांद्य, मलावष्टंभ, कफप्रधान लक्षण होने पर आरोग्यवर्धनी गुणकारी साबित होती है।

'पाचनी दीपनी पथ्या हृद्या मेदोविनाशिनी।
मलशुद्धिकरी नित्यं दुर्धषक्षुत्प्रवर्तिनी।।'
बहुनात्र किमुक्तेन सर्व रोगेषु शस्यते।'

यह रसकल्प पाचक, दीपक, पथ्यकारक, हृद्य, मेदनाशक, मलशोधक, भूक बढानेवाला और सर्व रोगनाशक बताया गया है।

आरोग्यवर्धनी रस में तिक्त कटु, वीर्य में अनुष्णशीत, विपाक में

कटु, कफपित्तनाशक, रक्तप्रसादक, क्लेदनाशक और मलभेदक है।

आरोग्यवर्धनी में कुटकी उपस्थित होने से यह कल्प रस और रक्त पाचक कार्य करता है। रक्तप्रदोषज विकार में यदि विरेचन करना हो, तो आरोग्यवर्धनी का प्रयोजन कर सकते है। अर्श यह मांस वह स्रोतस् का विकार है। अभिष्यंदी एवं विरुद्ध आहार से यह स्रोतस् दुष्ट होता है। आरोग्यवर्धनी में निम्ब भावना उपस्थित है, जो मांसपाचक का एक घटक द्रव्य है। यह कल्प अर्श व्याधि में मलावरोध को दूर कर उपशय देने में मदद करता है। अष्टौनिन्दित व्याधि में अतिस्थौल्य इस विकार का समावेश होता है। आरोग्यवर्धनी मेद का क्षय करनेवाली है। यह दीपन, पाचन, रुक्ष तथा मेदाग्नि पर कार्य करने से स्थौल्य की चिकित्सा में उपयुक्त है। साथ ही रुग्ण को कफ, मेद एवं क्लेदवर्धक आहार का सेवन बंद करना चाहिए। इस कल्प का विशेष उपयोग संतर्पणजन्य विकार जैसे प्रमेह, शोथ, उदर आदि में होता है। 'स्वेद' यह मेद का मल होता है। मेदोवृद्धि के कारण अतिस्वेद एवं दौर्गंध्य लक्षण दिखते है। अतिस्वेद अथवा अस्वेद यह कुष्ठ के पूर्वरुप में भी दिखाई देता है। कुष्ठ पर कार्यकारी आरोग्यवर्धनी मलशोधक होने से अतिस्वेद के लक्षण कम करने में सहायक है। कफप्रधान आहार, अव्यायाम, दिवास्वाप आदि के परिणाम स्वरुप कफ, मेद और क्लेद भी बढता है। इस कारण से कफज मेह निर्माण होता है और इस प्रकार के प्रमेह पर यह कल्प उपशय देता है। दीर्घकालीन मलावरोध के लिए आरोग्यवर्धनी उत्तम औषध है। यह अतिग्रथित मल प्रवृत्ति को नष्ट कर मल को सुखपूर्वक बाहर निकालने में मदद करता है। यह कल्प दीपक, पाचक होने से अग्निमांद्य नष्ट करता है तथा स्रोतोरोध को भी दूर करता है। इसलिए अन्नवह स्रोतस् के विविध स्रोतोरोधात्मक व्याधियों के सामावस्था नष्ट करने का कार्य आरोग्यवर्धनी से होता है। आरोग्यवर्धनी अवस्था भेद से अनेक विकारों में उपशय देती है, इसलिए इसे 'सर्वरोगप्रशमन' कहा गया है।

पुष्पधन्वा रस

भैषज्य रत्नावली – वाजीकरण ७४/७०
एस्. डी. एस्. मोनोग्राफ क्र. ०८००१५४

पुष्पधन्वा रस यह कल्प वृष्य है और नपुसंकतानाशक औषधों में इसका महत्त्वपूर्ण स्थान है। स्त्री एवं पुरुष दोनों में बीजकोष एवं बीजवाहिनियों का योग्य विकास करने में लाभदायी होता है। भैषज्य रत्नावली – वाजीकरण के पाठ अनुसार निर्मित पुष्पधन्वा रस में रससिंदूर एवं नाग भस्म और वंग भस्म उपस्थित है, जो पारद मारित भस्म है और लोह भस्म, अभ्रक भस्म भी सम्मिलीत है। यह सर्व द्रव्य प्रत्येकी १ भाग प्रमाण में है। इन सभी द्रव्यों को धत्तुर पत्र, हरितकी, यष्टीमधु, शाल्मली, नागवेल पत्र आदि द्रव्यों की भावना दी जाती है। यह योग शुक्रधात्वाग्नि पर कार्य करता है। स्त्री एवं पुरुष वंध्यत्व की चिकित्सा में इस कल्प का प्रयोग फलदायक साबित होता है। कल्प में उपस्थित रससिंदूर वाजीकरणार्थ उत्तम योग है, यह योगवाही और दुर्बलता नाशक होता है। **'नागस्तु नाग शत तुल्यं बलं ददाति। आयुष्कीर्तिं वीर्यवृद्धि करोति सेवनात्सदा।।'** (आ. प्र.) नाग भस्म बल्य, सप्तधातु पोषक और इंद्रिय को बल देता है। लोह भस्म बल्य और रसायन द्रव्य है। वंग भस्म शुक्रस्थान एवं शुक्रधातु पर बल्य कार्य करता है। यह उत्तम वृष्य, मेध्य और रसायन होता है। यष्टीमधु, स्निग्ध और शुक्रल है, शाल्मली भी मधुर रसात्मक और मधुर विपाकी है। साथ ही हरितकी की भावना उपस्थित है। हरीतकी रसायन है और चरक संहिता रसायनाध्याय में क्लैब्य को दूर करने में उपयुक्त बताई गई है। अंडकोष, फलवाहिनी, शुक्रवाहिनी का योग्य विकास न होने से अथवा उनमें विकृति उत्पन्न होने से यदि नपुंसकत्व होता है, तो पुष्पधन्वा रस का प्रयोग फलद
ायक होता है।

आजकल की तनावग्रस्त जीवनशैली के कारण वंध्यत्व की समस्या दिखाई दे रही है। पुष्पधन्वा रस में अभ्रक भस्म उपस्थित होने से, मानसिक हेतु के कारण उत्पन्न वंध्यत्व में इस कल्प का प्रयोजन कर सकते है। साथ ही अतिव्यवाय के कारण स्मृतिनाश एवं निद्रानाश में भी यह कल्प उपयुक्त होता है। इसमें उपस्थित वंग भस्म 'स्मृतिप्रद' कहा

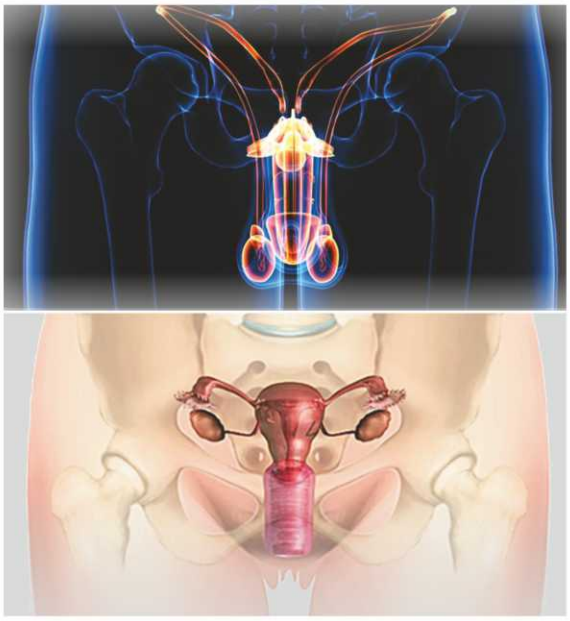

गया है, जो इस अवस्था में गुणकारी हो सकता है। स्त्रियों में बीज वैगुण्य अथवा बीजवाहिनियों में स्रोतोरोध से वंध्यत्व होता है एवं अस्थिक्षय, अस्थिसौषिर्य जैसे लक्षण भी दिखते हैं। इस अवस्था में अत्यधिक दौर्बल्य भी रहता है तथा मानसिक लक्षण होने पर पुष्पधन्वा रस लाभदायक होता है। प्रमेह अथवा मधुमेह विकार के उपद्रव स्वरूप उत्पन्न नपुंसकता में पुष्पधन्वा रस का प्रयोग कर सकते है।

त्रिभुवनकीर्ति रस

एस्. डी. एस्. मोनोग्राफ – ०८००२३४
भारत भैषज्य रत्नाकर २/२७५५

त्रिभुवनकीर्ति रस एक उत्कृष्ट कफघ्न, उष्ण, तीक्ष्ण, दीपक, पाचक एवं शोथहर द्रव्यों से युक्त कल्प है। यह कल्प ज्वर में विशेषत: वातकफप्रधान एवं विषमज्वर में गुणकारी साबित होता है। इस कल्प के ज्वरघ्न गुण की कीर्ति त्रिखंड में प्रसिद्ध होने से इसे त्रिभुवनकीर्ति रस के नाम से जाना जाता है।

हिंगुलं च विषं व्योषं टंकणं मागधीशिफाम्।
संचूर्ण्य भावयेत् त्रेधा सुरसार्द्रकहेमभि:।।
रसस्त्रिभुवनकीर्ति गुंजैकार्द्रद्रवेण वै।।

यो. र.

त्रिभुवनकीर्ति रस खल्वीय रसायन निर्माण विधी अनुसार तैयार किया जाता है। शोधित हिंगुल, शोधित वत्सनाभ, टंकण, शुंठी,

मरिच, पिप्पली, पिप्पलीमूल इन द्रव्यों को प्रत्येकी १ भाग लेकर तुलसी स्वरस, आर्द्रक स्वरस और धत्तुर पत्र स्वरस की भावना दी जाती है।

कल्प में उपस्थित अधिकतर द्रव्य उष्ण, तीक्ष्ण, दीपक, पाचक है, जैसे शुंठी, मरिच, पिप्पली, पिप्पलीमूल आदि। इस कल्प का विशेष कार्य आमाशय पर होता है, जो ज्वर व्याधि निर्मिती का प्रमुख स्थान है। यह कल्प आमशयस्थ आम दोषों का पाचन करने में मदद करता है। शोधित हिंगुल और शोधित वत्सनाभ जैसे महत्त्वपूर्ण योगवाही घटक द्रव्य इसमें सम्मिलीत है। वत्सनाभ के दुष्परिणाम न हो इसलिए टंकण भी त्रिभुवनकीर्ति रस की कल्प रचना में उपस्थित है। शोधित हिंगुल कफनाशक, शोथहर, योगवाही होता है। शोधित वत्सनाभ कफघ्न, वातशामक, स्वेदजनक, ज्वरघ्न और आमपाचक कार्य करता है। शुंठी कटु रसात्मक, उष्ण, कफघ्न, आमपाचक एवं अग्निदीपक है, मरिच भी अग्निदीपक, उष्ण और कफघ्न है। पिप्पली योगवाही एवं रसायन होती है तथा कफघ्न, कासहर एवं वातनाशक कार्य करता है। धत्तुर पत्र स्वरस भावना से यह कल्प वेदनाशमन करने में सहायक होता है, साथ ही ज्वर भी कम होता है। तुलसी और आर्द्रक स्वरस कफघ्न कार्य करते है।

विनाशयेत् ज्वरान् सर्वान् सन्निपातान् त्रयोदश।

यो. र.

त्रिभुवनकीर्ति रस सभी प्रकार के ज्वर और सन्निपात ज्वर में उपयुक्त योग है।

वातश्लेष्मात्मके स्वेदः प्रशस्तः स प्रवर्तयेत्।
स्वेद मूत्र शकृद्वातान् कुर्यादग्नेश्च पाटवम्।।

अ. हृ. चि. १/२०

आचार्य वाग्भट अनुसार वातकफ ज्वर में स्वेदन करना उचित बताया है, स्वेदन के प्रयोग से स्वेद, मूत्र, पुरीष (मल) तथा अपान वायु की प्रवृत्ति आसानी से होती है और जाठराग्नि भी प्रदीप्त होती है। इस सिद्धांत अनुसार त्रिभुवनकीर्ति रस जो वत्सनाभ जैसे स्वेदजनक द्रव्य से युक्त है, वातकफज ज्वर की चिकित्सा में फलदायक साबित होती है। ज्वर में सर्व प्रथम लंघन करना चाहिए और कोष्ण जल जैसे आमपाचक द्रव्य की योजना करनी चाहिए। लंघन से दोष पाचन होने के पश्चात् इस रस का उपयोग उत्तम होता है। ज्वर में अरुची, आलस्य, गौरव, प्रतिश्याय, कास, श्वास आदि कफप्रधान लक्षण कम होने पर त्रिभुवनकीर्ति रस उपयुक्त होता है। इन लक्षणों के साथ पिंडिकोद्वेष्टन, शिरःशूल, सर्वांगवेदना, शीत प्रचिती आदि वात प्रधान लक्षण भी कम होते हैं। शीतपूर्वक विषमज्वर में इस कल्प का प्रयोग कर सकते है। जब दोष शिर, कंठ, उर, आमाशय, संधी इन कफस्थान में होने पर संततादि विषमज्वर निर्माण करते है, तब त्रिभुवनकीर्ति रस उपयुक्त होता है। त्रिभुवनकीर्ति रस का मुख्य कार्य आमपाचन एवं स्वेदजनन है। ज्वर की आमावस्था में संचित आम का पाचन कर स्रोतसों से अवरोध दूर करने का कार्य यह कल्प करता है। स्रोतोरोधात्मक संप्राप्ती से उत्पन्न ज्वरादि व्याधियों पर यह फलदायक होता है।

गलग्रंथी शोथ के कारण ज्वर दिखाई देता है। इस अवस्था में यह योग शोथ एवं वेदना कम कर ज्वर नष्ट करने में सहायक होता है। रोमांतिका व्याधि में त्रिभुवनकीर्ति रस गुणकारी होता है। पाषाणगर्दभ विकार में लालास्राव उत्पादक स्रोतसों का शोथ इस कल्प के प्रयोग से कम होता है, साथ ही वेदना और ज्वर भी नष्ट होने में मदद करता है।

ज्वर में भ्रम, मूर्च्छा, छर्दी, स्वेदाधिक्य, तृष्णा, दाह, तीव्र ज्वरवेग आदि पित्त प्रधान लक्षण होने पर त्रिभुवनकीर्ति रस का उपयोग नहीं करना चाहिए, यह कल्प उष्ण, तीक्ष्ण होने से लक्षण बढने की संभावना होती है।

त्रिभुवनकीर्ति रस विशेषतः कफप्रधान प्रकृति में, आनूप देश, उरःकंठादि कफस्थान विकृती और साथ में अग्निमांद्य,

आमाशयसंबंधित लक्षण होने पर गुणकारी साबित होता है।

ऋतु बदलाव के कारण अथवा अधिक शैत्य के कारण उत्पन्न प्रतिश्याय, ज्वर, अंगमर्द, गलसंरंभ, नासास्राव आदि लक्षणों में उपयुक्त होता है। इस कल्प का प्रयोग सितोपलादि चूर्ण, तालीसादि चूर्ण, अमृतारिष्ट, महासुदर्शन काढा जैसे अन्य औषधियों के साथ कर सकते है।

मकरध्वज गुटिका

आयुर्वेद सार संग्रह
एस्. डी. एस्. मोनोग्राफ – ०९०००३४

मकरध्वज गुटिका यह सुवर्ण भस्म एवं पूर्णचंद्रोदय मकरध्वज आदि वृष्य एवं रसायन द्रव्य युक्त कल्प है। आचार्य चरक

अनुसार 'स्वस्थस्योर्जकरं यत्तु तद् वृष्य तद्रसायनम्।' अर्थात् जो औषध द्रव्य स्वास्थ्य के लिए उर्जस्कर (ओजोवर्धक) होते हैं, प्राय: वृष्य एवं रसायन गुण के होते है। इन रसायन द्रव्यों के साथ इस कल्प में कर्पूर (भीमसेनी), जातीफल, मरिच, लवंग एवं कस्तुरीलतिका बीज भी सम्मिलीत है, जो सूक्ष्म स्रोतोगामित्व बढाने में उपयोगी है। इस कल्प को नागवल्लीपत्र की भावना दी जाती है। मकरध्वज गुटिका सुवर्णयुक्त कल्प होने से धातुओं की पुष्टी के लिए अत्यंत उपयुक्त वाजीकर औषध है। इसका शारीरिक तथा मानसिक कमजोरी दूर करने के लिए प्रयोग कर सकते है। इस कल्प में उपस्थित जातीफल शुक्र स्तंभक कार्य करता है। पूर्णचंद्रोदय मकरध्वज उत्कृष्ट सप्तधातुपोषक है। एवं इंद्रियों की कार्यशक्ति बढाता है तथा रसायन होने से अकाल वार्धक्य को दूर करता है। यह कल्प स्थानिक एवं सार्वदेहिक शुक्रक्षय को दूर करता है। शुक्राणु क्षय एवं बीज दुष्टि की चिकित्सा में प्रयोग कर सकते है। साथ ही यह क्लैब्य में वाजीकरण गुणों से युक्त होने के कारण गुणकारी साबित होता है। शुक्र धात्वग्नि का वर्धन कर यह कल्प शुक्रधातु के सार भाग की निर्मिती एवं ओजोवर्धक कार्य करता है। राजयक्ष्मा व्याधि में उत्पन्न धातुक्षय, धातुक्षय के कारण उत्पन्न श्वास एवं कास की चिकित्सा में उत्तम बल्य औषध है। मधुमेह जन्य नपुंसकता को दूर करने में भी उपयोग कर सकते है। रसादिक शुक्रान्त धातुओं के उत्कृष्ट तेज (सार) भाग को ओज कहते है। यह ओज सर्व शरीर व्यापी होता है।

बिभेति दुर्बलोऽभीक्ष्ण ध्यायति व्यथितेन्द्रिय:।
दुश्छायो दुर्मना रूक्ष क्षामश्चैवौजस: क्षये।। च. सू. १७/७३

ओजक्षय होने से सदैव भयभीत रहना, बार–बार चिन्ता करना, इन्द्रियों में कार्य करने का उत्साह नहीं रहना, शरीर का वर्ण मलिन होना, मन दु:खी रहना, शरीर में रूक्षता का बढना आदि लक्षण दिखते है। मकरध्वज गुटिका में वृष्य एवं रसायन द्रव्य उपस्थित होने से, यह कल्प ओज का वर्धन कर उपरोक्त लक्षणों को कम करने में मदद करता है।

केवल पंजीकृत चिकित्सक, अस्पताल या प्रयोगशालाओं के लिये
© All Copy Rights Reserved

श्री धूतपापेश्वर लिमिटेड
१३५, नानुभाई देसाई रोड, खेतवाडी, मुंबई – ४००००४. • फोन नं.:+९१–२२–६२३४ ६३००, २३८२ ५८८८
ई–मेल: healthcare@sdlindia.com • वेब: www.sdlindia.com

AVP-H/SDL-VT/HEMANT/A/1019